UGC CARE Enlisted Journal

ISSN 2582-5356
RNI-UPBIL/2018/78084
Volume 5/Issue 6 ❖ January - June, 2022
Bilingual (English & Hindi)

KUTAP
AN ENSEMBLE OF MUSICIANS
कुतप

A Peer Reviewed Refereed International Journal

संगीत एवं अन्तर-विषयक विधाओं पर केन्द्रित

Editor
Prof. (Dr.) RENU JOHRI

KUTAP Volume 5, Issue 6 ❖ January-June, 2022 *Editor* : Prof. (Dr.) RENU JOHRI

पद्मभूषण पं. सामता प्रसाद ट्रस्ट ऑफ तबला के तत्वावधान में
गुदई महाराज जी की 28वीं पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में
आयोजित
तबला दिवस समारोह
दिनांक : 31 मई
विनीत - ट्रस्ट के समस्त सदस्य

ISSN : 2582–5356
UGC CARE Enlisted Journal
RNI No. UPBIL/2018/78084

कुतप

वर्ष : 5 **अंक : 6** **जनवरी-जून, 2022**

सम्पादक

प्रो. (डॉ.) रेनू जौहरी

प्रकाशक

पाठक पब्लिकेशन

35, महाजनी टोला, जीरो रोड
इलाहाबाद-211003 (उ.प्र.)

Instruction for Contributors and Subscribers

Authors are requested to send their papers based on *Music and interdisciplinary Branches*. The length of a paper including tables, diagrams, illustrations, etc., should not exceed 20 double spaced pages. Manuscripts sent for publication in this journal should not have been published or sent for publication elsewhere and authors will submit a certificate in this regard. All correspondence will be held with the senior (first author only).

Two copies of the manuscript typed in double space size 12, in "Times Roman" font and in hindi Krutidev-10 on A4 size bond paper should be submitted. The same will be submitted through email. All contributions submitted will be subjected to peer review. The decision of Editorial Committee will be the final.

The authors are responsible for copyright clearance for any part of the contents of their articles. The opinions expressed in the articles of this journal are those of the authors and do not reflect the objectives or opinion of the journal.

Authors are requested to send their manuscripts to :

Prof. (Dr.) Renu Johri

Editor

Prof. (Dr.) Renu Johri

Professor. Music & Performing Arts Deptt,

University of Allahabad-211002

renujohri2@gmail.com

SUBSCRIPTIONS

In Other Countries (US$)			**In India (Rs.)**		
Print	:	3000.00	Print	:	500.00
Online	:	2000.00	Online	:	250.00
Print+Online	:	7000.00	Print + Online	:	700.00

Published by : RATNAKAR PATHAK

Printed by : ROBIN DIXIT on behalf of RENU JOHRI.

Printed at : CHANDRAKALA UNIVERSAL PVT. LTD. 42/7

JAWAHAR LAL NEHRU ROAD, PRAYAGRAJ

Published from : PATHAK PUBLICATION, 35 MAHAJANI TOLA

ZERO ROAD, PRAYAGRAJ-211003

Editor : **Prof (Dr.) Renu Johri**, A-6, University Flats Chaitham Lines, Prayagraj

EDITORIAL

I am pleased to release 6th issue of 'Kutap' an international peer reviewed, referred journal with RNI, ISSN & one more feather is added to it- now it is UGC care enlisted. Researchers & Faculty members from far & wide have contributed their art, culture & many more branches of knowledge . It's like bouquet of beautiful flowers of different branches of knowledge. Although this is an essential need of present day scholar's to publish paper from their respective fields & teachers to share their knowledge and expertise as annual progress, but sharing of knowledge was our grand tradition . Since Vedic period when scholars shared their knowledge for the sake of knowledge in the form of scripts, commentaries, epics, books, magazines etc.

Term 'Kutap' is derived from 'Natya Shashtra' which literally means 'Group of musicians'. There are several other meanings too which I have already described in previous issues of Kutap. The bottom line is that Kutap denotes 'Group', collective noun which is associated with people from Far & wide.

Tendering my heartfelt Naman to Padambhushan Pt. Samta Prasad Ji & my Guruji Pt. Kumar Lal Mishra, I dedicate this issue to all those musicians who have left us for their heavenly abode – Bharat Ratna Lata Mangeshkar, Padamvibhushan Pt. Birju Maharaj, Shri Bappi Lahiri, Padam Vibhushan Pt. Shiv Kumar Sharma, Pt. Bhajan Sopari, Ut. Laxman Seen singh, Ut. Manju Khan. My heartfelt Naman to all.

Dear readers this issue of Kutap is for your kind perusal.

Thanks & regards

Prof. Renu Johri

Editor, Kutap journal

अनुक्रमणिका / Index

पृष्ठ

- सम्पादकीय iii

प्रथम अध्याय – संगीत सम्बन्धी लेख

1. भारतीय शास्त्रीय संगीत में घराना पद्धति (निरन्तरता और परिवर्तन) 1
अपराजिता झा
2. Ras and bhav in seasonal Ragas 8
Arshdeep Singh
3. आगरा घराने के मूर्धन्य गायक पं० रातनजंकर की भारतीय संगीत जगत को अनुपम देन 13
अल्का सिंह, डॉ० ज्योति मिश्रा
4. भारत में संगीत शास्त्र ग्रन्थों के अध्ययन की उपयोगिता (सिनेमा के सन्दर्भ में) 17
आशीष जायसवाल, डॉ० सुदीप्ता शर्मा
5. संगीत एवं संगीत शिक्षा का मानव मस्तिष्क पर प्रभाव–विश्व शान्ति का प्रमुख उत्प्रेरक 20
अंजलि नारायण
6. Yoga based Bhakti in compositions of Mutthu Swami Dikshitar 26
Utapala karanth, Dr. Rangan
7. नाट्यशास्त्र में वर्णित त्रिपुष्कर के सम्बन्ध में षट्करण का विश्लेषण 34
कीर्ति महेन्द्र, प्रो० रेनू जौहरी
8. भारतीय संगीत के व्यवसाय के क्षेत्र। 37
गुरप्रीत कौर
9. भारत में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के माध्यम से संचालित भारतीय शास्त्रीय संगीत के पाठ्यक्रमों का विश्लेषण : उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय के सन्दर्भ में 41
द्विजेश उपाध्याय, प्रो० संध्या रानी शाक्य
10. Sageetacharya Tarapada Chakrborty's contribution in Hindustani classical Music 50
Diya Saha Ghosh
11. लोकगीतों में ऋतुकालीन रचनाएँ (पूर्वी उत्तर प्रदेश के विशेष संदर्भ में) 54
दिव्या श्रीवास्तव, प्रो० विद्याधर प्रसाद मिश्र
12. Placing of seven swaras on 22 Shruti and string of veena in Indian classical music 58
Deepika Srivastava

13. हिन्दी सिनेमा में उत्तर प्रदेश की लोक गायन शैलियों का प्रयोग 68
देवेन्द्र कुमार गुप्ता, प्रो० विद्याधर प्रसाद मिश्र
14. तबले के दिल्ली घराने का वर्तमान स्वरूप 70
निधि श्रीवास्तव
15. पद्मभूषण आचार्य पं० गोकुलोत्सव जी महाराज–शास्त्रीय संगीत के बहुआयामी सर्वतोमुखी व्यक्तित्व 72
नीता माथुर
16. राग संगीत में कल्याण अंग 75
नीतू तिवारी
17. विद्यालयीन शिक्षण में सुगम, स्वस्थ एवं प्रेरक बन्दिशों की उपयोगिता (ख्याल शैली के सन्दर्भ में) 78
नेहा चौहान
18. The development of different Tabla Gharana in west Bengal and the traditional practice of Tabla 84
Parth Dey
19. शास्त्रीय संगीत गायन एवं वादन में बन्दिशों का स्वरूप 89
पूजा द्विवेदी
20. संगीत मार्तण्ड पं० जसराज द्वारा गाये गयें कृष्ण भक्ति गीत का सांगीतिक विश्लेषण 91
प्रणाली सिंह, प्रो० लवली शर्मा
21. तबला में टुकड़ा 96
प्रेम प्रकाश प्रजापति
22. गुरूमत संगीत की विशिष्ट गायन शैली पड़ताल 99
बलदीप कौर, प्रो० पं० प्रेम कुमार मलिक
23. ध्रुपद परम्परा में दरभंगा घराने का योगदान 105
मोनिका धर प्रो०, पं० प्रेम कुमार मलिक
24. तन्त्री वाद्यों में प्रयुक्त विभिन्न गत वादन षैलियों में नवाचार का इतिहास (सितार एवं सरोद वादन के विशेष सन्दर्भ में) 111
रितु सिंह
25. ख्याल शैली की रचनागत विशिष्टता का सौन्दर्यबोध 117
रूचि मिश्रा, डॉ० प्रिया पाण्डे
26. कथक नृत्य में तोड़ो की संगति 125
रूबी वर्मा, प्रो० नीलू शर्मा

27. हिन्दुस्तानी संगीत में रामपुर–सदारंग परम्परा व सहसवान घराने का योगदान 129
रोली कनौजिया
28. पं० भातखण्डे कृत 'श्रीमल्लक्ष्यसंगीतम्' का स्वराध्याय' : एक अध्ययन 133
लावण्य कीर्ति सिंह 'काव्या'
29. स्वतन्त्र तबला वादन की रीति तथा सौन्दर्यात्मक तत्व 138
शशि राय, प्रो० पं० प्रेम कुमार मलिक
30. संगीत के जरिए कबीर की खोज : हद–अनहद 140
शीतांशु
31. चित्रपट संगीत में शास्त्रीय संगीत की प्रासंगिकता 144
स्वाति शर्मा
32. The classical maestros in Hindi Film Music 148
Sayani Palit, Dr. Manasi Majumder
33. शास्त्रीय संगीत की अनमोल सम्पदा : तान (ख्याल शैली के सन्दर्भ में) 153
सागर शर्मा
34. हरियाणा के लोकप्रिय वाद्य यन्त्र 155
सीमा जौहरी
35. A comparative study of voice culture in western classical music and North Indian vocal music 162
Sumedha Singh, Prof. K. Shashi kumar
36. बौद्ध धर्म एवं संगीत सारनाथ के परिप्रेक्ष्य में 167
सुरजीत कुमार सिंह एवं धम्म रतन
37. पं० शंकरराव गणेश व्यास– एक यशस्वी फिल्म संगीत निर्देशक 173
सोनिया आहूजा
38. मैहर वाद्यवृन्द 176
संजय कुमार वर्मा
39. भारतीय संगीत के परिप्रेक्ष्य में शास्त्रीय संगीत शिक्षण एवं प्रदर्शन 180
श्रद्धा जायसवाल, डॉ० ज्योति मिश्रा

द्वितीय अध्याय – संगीत एवं अन्तर्विषयक लेख

1. भारतीय संगीत और विज्ञान में संवाद 184
अतिन्द्र सरवडीकर
2. स्मृति ग्रन्थों में वर्णित गुरू–षिष्य दायित्वों एवं कर्तव्यों का अध्ययन : संगीत के सम्बन्ध में 190
अमित कुमार शुक्ल

3.	बीजगणित के सिद्धान्तों से वैदिक ग्रन्थों में दिए जीवन के तीन मूल्य उद्देश्य गुरू ग्रन्थ और गोविन्द की परिकल्पना अवनीश चतुर्वेदी	195
4.	मानव मस्तिष्क पर लोक संगीत का मनोवैज्ञानिक प्रभाव आकांक्षा पाल	198
5.	तेजेन्द्र शर्मा की कहानियों में दाम्पत्य सम्बन्धों के विभिन्न रूप ज्योति बसरा	201
6.	आचार्य भरत द्वारा वर्णित रस–भाव दर्शी श्रीवास्तव, प्रो. रेनू जौहरी	206
7.	Vedic Influence and evolution of Music tradition P.S. Harish	210
8.	विज्ञापन और हिन्दी मंजू बाला	216
9.	राम नरेश त्रिपाठी के काव्य में ग्राम चेतना राजेश गर्ग	220
10.	सरकारी योजनाओं का दिव्यांगों (शोधार्थियों) के विकास में योगदान विक्की कुमार, प्रो० रेनू जौहरी	225
10.	Subaltern in Nissim Ezekiel's poetry Shubhi Bhasin	228
11.	महादेवी वर्मा के 'नीरजा' काव्य संकलन में वेदना की अभिव्यंजना सुधा मेहला	233
12.	ज्ञानप्रकाश विवेक की कहानियों में व्यक्तित्व विघटन सुमन मलिक, डॉ० राजिन्द्र पाल सिंह 'जोश'	238
●	**समाचार**	244

भारत में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षण प्रणाली के माध्यम से संचालित भारतीय शास्त्रीय संगीत के पाठ्यक्रमों का विश्लेषण : उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय के सन्दर्भ में

द्विजेश उपाध्याय*, डॉ. संध्या रानी शाक्य†

सार : वर्तमान में सम्पूर्ण विश्व के साथ–साथ भारत में भी मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षण प्रणाली, अध्ययन–अध्यापन की मुख्य प्रणालियों में अपना स्थान बना चुकी है तथा शिक्षा व्यवस्था का एक अभिन्न अंग बन चुकी है। विद्वान इसके दो प्रमुख कारण मानते हैं, पहला गुरू–शिष्य के कठोर नियम व परम्पराएं तथा संस्थागत व नियमित प्रणाली की अपनी कुछ सीमाएं जैसे उम्र, 12वीं के बाद अधिक समय होने पर प्रवेश में कठिनाई, प्रवेश अर्हता में अंक प्रतिशत, विषय चयन आदि में शिथिलता प्रदान करना तथा दूसरा इस प्रणाली में संप्रेक्षण माध्यमों जैसे रेडियो, दूरदर्शन, टेलीफोन, श्रव्य–दृश्य सामग्री, कम्प्यूटर, इंटरनेट आदि की प्रधानता तथा सूचना तकनीक में होते नित–नवीन आविष्कारों व विकास को इस प्रणाली द्वारा अपनी शिक्षण पद्धति में समाहित करना। अपनी इन्हीं विशेषताओं के कारण मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली अन्य विषयों के साथ–साथ शास्त्रीय संगीत जैसे कलात्मक एवं प्रयोगात्मक विषय में भी अत्यधिक प्रभावी एवं लोकप्रिय बनती जा रही है तथा इस प्रणाली के माध्यम से प्रत्येक शिक्षार्थी को शिक्षित किया जाना सम्भव प्रतीत होता है। इसी उद्देश्य से वर्ष 1984 में मद्रास विश्वविद्यालय द्वारा भारतीय शास्त्रीय संगीत विषय में स्नातक स्तर का मुक्त एवं दूरस्थ प्रणाली आधारित पाठ्यक्रम प्रारम्भ किया गया।

प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से उत्तराखण्ड़ मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा भारतीय शास्त्रीय संगीत विषय में संचालित पाठ्यक्रमों तथा इनमें पंजीकृत शिक्षार्थियों से सम्बन्धित विभिन्न पहलुओं जैसे लिंगवार, क्षेत्रवार, राज्यवार, आयु सम्बन्धी, आजीविका स्थिति आदि का विश्लेषण प्राथमिक आंकड़ों के माध्यम से किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र में पंजीकृत छात्रों की संख्या के आधार पर यह पाया गया कि भारतीय शास्त्रीय संगीत विषय मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षण प्रणाली के माध्यम से भी शिक्षार्थियों में लोकप्रिय हो रहा है।

मुख्य शब्द – मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षण प्रणाली, गुरू–शिष्य प्रणाली, संस्थागत प्रणाली, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी, शिक्षार्थी।

प्रस्तावना – भारत में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के प्रति शिक्षार्थियों के रूझान में वृद्धि देखने को मिल रही है। विद्वान इसका प्रमुख कारण मानते है कि प्रत्येक शिक्षा प्रणाली ने शिक्षण की नवीन पद्धतियों, जो शिक्षार्थी केन्द्रित हैं तथा सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (ICT) आधारित है, का समावेश स्वयं में किया है। ऐसे में प्रचलित शिक्षण प्रणालियों में से मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षण प्रणाली प्रमुख रूप से उभर कर आई है तथा यह सम्पूर्ण विश्व के साथ–साथ भारत में भी अध्ययन–अध्यापन की मुख्य प्रणालियों में अपना स्थान बना चुकी है तथा शिक्षा व्यवस्था का एक अभिन्न अंग बन चुकी है।

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षण प्रणाली अध्ययन एवं अध्यापन की एक ऐसी प्रणाली है जो उन सभी इच्छुक शिक्षार्थियों को शिक्षा प्राप्त करने का अवसर उपलब्ध कराती है जो व्यक्तिगत, सामाजिक, आर्थिक आदि कारणों से परम्परागत पद्धति से शिक्षा प्राप्त करने में असक्षम हैं। साथ ही ऐसे इच्छुक सभी शिक्षार्थियों को भी अवसर उपलब्ध कराती है जो अपनी नौकरी, कामकाज आदि के साथ अपनी पढ़ाई को जारी रखना चाहते हैं। अपनी इन्हीं विशेषताओं के साथ–साथ विद्यार्थी केन्द्रित शिक्षण पद्धतियां, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (ICT) आधारित शिक्षण पद्धतियां आदि

---

* द्विजेश उपाध्याय, शोध छात्र–संगीत, रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश।

† प्रोफेसर(डॉ0) संध्या रानी शाक्य, क्षेत्रीय उच्च शिक्षा अधिकारी–बरेली मंडल, बरेली, उत्तर प्रदेश।

कारण से ही, मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षण प्रणाली उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले शिक्षार्थियों के मध्य अत्यधिक लोकप्रिय व प्रभावी हो चुकी है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत एक कलात्मक एवं प्रयोगात्मक विषय है तथा इसका अध्ययन–अध्यापन उपलब्ध शिक्षण प्रणालियों में से मुख्यतः गुरू–शिष्य प्रणाली के माध्यम से ही प्रभावी माना जाता है। इस बात को यह तथ्य आधार देते हैं कि भारतीय शास्त्रीय संगीत के लगभग सभी कलाकार, शिक्षक, विद्वान ने किसी न किसी रूप में गुरू–शिष्य प्रणाली से जुड़कर इसका ज्ञान प्राप्त किया होगा, चाहे उनके द्वारा अन्य प्रणालियों के माध्यम से भी भारतीय शास्त्रीय संगीत की शिक्षा ग्रहण की गई हो। विद्वानों का मानना है कि इन प्रणालियों से शिक्षा प्राप्त करने के उद्‌देश्यों के सम्बन्ध में शिक्षार्थियों के मत में भिन्नता हो सकती है किन्तु मूल उद्‌देश्य सभी का समान ही रहता है और वह है भारतीय शास्त्रीय संगीत का ज्ञान प्राप्त करना।

गुरू–शिष्य प्रणाली एवं संस्थागत प्रणाली के अन्तर्गत भारतीय शास्त्रीय संगीत की उच्च शिक्षा में भिन्नता देखने को मिलती है। गुरू–शिष्य प्रणाली के अन्तर्गत अध्ययन–अध्यापन की सम्पूर्ण प्रक्रिया गुरू के नियन्त्रण में होती है तथा गुरू अपनी परम्पराओं के अनुसार शिष्य को ज्ञान प्रदान करता है। इसमें कोई निश्चित प्रवेश प्रक्रिया, निश्चित पाठ्‌यक्रमानुसार शिक्षण, मूल्यांकन हेतु परीक्षा जैसे विभिन्न पहलु नहीं होते हैं। वही संस्थागत प्रणाली में सम्बन्धित संस्थान या यू0जी0सी0 द्वारा निर्धारित प्रवेश प्रक्रिया, निश्चित पाठ्‌यक्रमानुसार शिक्षण तथा मूल्यांकन हेतु परीक्षा कराई जाती है। अर्थात संस्थागत प्रणाली के अन्तर्गत शिक्षार्थियों को एक निश्चित प्रक्रिया के अनुसार भारतीय शास्त्रीय संगीत का ज्ञान प्रदान किया जाता है।

गुरू–शिष्य प्रणाली एवं संस्थागत प्रणाली की उक्त प्रकार की सीमाओं व बन्धनों तथा उम्र, स्थान, समय आदि जैसे नियमों के कारण, भारतीय शास्त्रीय संगीत का ज्ञान अर्जित करने के इच्छुक सभी शिक्षार्थी शिक्षा ग्रहण नहीं कर पाते हैं। ऐसे में भारतीय शास्त्रीय संगीत का ज्ञान अर्जित करने के इच्छुक सभी शिक्षार्थियों के लिए एकमात्र विकल्प, मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षण प्रणाली रहता है। मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षण प्रणाली, गुरू–शिष्य प्रणाली एवं संस्थागत प्रणाली के कई बन्धनों, सीमाओं, नियमों आदि में शिथिलता प्रदान करती है क्योंकि इस प्रणाली का मुख्य उद्‌देश्य ही है ऐसे सभी शिक्षार्थियों को शिक्षा प्रदान करना जो व्यक्तिगत, सामाजिक, आर्थिक आदि विभिन्न कारणों से अन्य प्रणालियों से शिक्षा प्राप्त करने में अक्षम हैं।

भारत में उच्च शिक्षा की स्थिति–प्रस्तुत शोध में उच्च शिक्षा के अन्तर्गत उच्च शिक्षण संस्थानों की संख्या एवं शिक्षार्थियों के नामांकन को लिया गया है। यू0जी0सी0 की वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार 31 मार्च 2021 तक भारत में उच्च शिक्षा प्रदान करने वाले संस्थानों की कुल संख्या 982 है। इनमें से केन्द्रीय विश्वविद्यालय की संख्या 54, राज्य सार्वजनिक विश्वविद्यालय की संख्या 425, सम विश्वविद्यालय की संख्या 125, राज्य निजी विश्वविद्यालय की संख्या 375 तथा राज्य विधानमंडल अधिनियम के तहत स्थापित संस्थानों की संख्या 03 है। इसी प्रकार उत्तराखण्ड़ में उच्च शिक्षा प्रदान करने वाले संस्थानों की कुल संख्या 33 है। इनमें से केन्द्रीय विश्वविद्यालय की संख्या 01, राज्य सार्वजनिक विश्वविद्यालय की संख्या 11, सम विश्वविद्यालय की संख्या 03 तथा राज्य निजी विश्वविद्यालय की संख्या 18 है।

यू0जी0सी0 की वर्ष 2011 से 2020 तक की वार्षिक रिपोर्ट के आधार पर यह तथ्य सामने आए हैं कि विगत 10 वर्षों में भारत में जनसंख्या वृद्धि के साथ–साथ उच्च शिक्षा में हुए नामांकन में भी वृद्धि हुई है। भारत में वर्ष 2011 में उच्च शिक्षा में 29184331 शिक्षार्थियों ने प्रवेश लिया जो वर्ष 2020 में 39434256 पहुंच गया है। उत्तराखण्ड़ में वर्ष 2019–20 में कुल 493279 शिक्षार्थियों ने उच्च शिक्षा में प्रवेश लिया है।

भारत में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की स्थिति–भारत में वर्तमान में मुक्त एवं दूरस्थ प्रणाली के माध्यम से उच्च शिक्षा प्रदान करने वाले संस्थानों की कुल संख्या 68 है। इनमें से केन्द्रीय विश्वविद्यालयों की संख्या 08, राज्य विश्वविद्यालयों की संख्या 26, राज्य मुक्त विश्वविद्यालयों की संख्या 14, निजी विश्वविद्यालय की संख्या 14 तथा सम विश्वविद्यालय की संख्या 06 है। इनमें से उत्तराखण्ड़ के 03 संस्थान हैं– उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी, उत्तराखण्ड; युनिवर्सिटी ऑफ पेट्रोलियम एंड एनर्जी स्टडीज, देहरादून, उत्तराखण्ड तथा ग्राफिक एरा यूनिवर्सिटी, देहरादून, उत्तराखण्ड है। इनमें से केवल उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी ही भारतीय शास्त्रीय संगीत में

पाठ्यक्रम संचालित करता है। आयोग ने इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय–दिल्ली को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (मुक्त और दूरस्थ ज्ञानअर्जन कार्यक्रम तथा ऑनलाइन कार्यक्रम) विनियम, 2020 से छूट प्रदान की है।

विगत 10 वर्षों में भारत में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षण प्रणाली के माध्यम से उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले शिक्षार्थियों की संख्या में वृद्धि देखने को मिली है।

तालिका 1 : भारत में मुक्त एवं दूरस्थ प्रणाली में पंजीकृत शिक्षार्थी

वर्ष	भारत में शिक्षार्थियों का कुल नामांकन (मुक्त एवं दूरस्थ माध्यम)	उत्तराखण्ड़ में शिक्षार्थियों का कुल नामांकन (मुक्त एवं दूरस्थ माध्यम)
2011–12	2675386	15538
2012–13	3421359	23141
2013–14	2849661	22487
2014–15	3811723	22440
2015–16	3824901	29918
2016–17	4089781	38316
2017–18	4031594	53278
2018–19	3972068	60117
2019–20	4286922	79289
2020–21	–	90125

स्रोत : यू0जी0सी0 की वार्षिक रिपोर्ट 2011–12 से 2020–21 तक तथा उत्तराखण्ड़ मुक्त विश्वविद्यालय(ICT विभाग) से प्राप्त आंकड़े(अनन्तिम आंकड़े)

उच्च शिक्षा पर अखिल भारतीय सर्वे (AISHE) 2019–20 के अनुसार भारत में कुल नामांकन का लगभग 11.1 प्रतिशत, दूरस्थ शिक्षा का नामांकन है।

उत्तराखण्ड़ मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा मुक्त एवं दूरस्थ प्रणाली के माध्यम से संचालित भारतीय शास्त्रीय संगीत के पाठ्यक्रम –भारत में वर्ष 1984 में सर्वप्रथम मद्रास विश्वविद्यालय, चेन्नई, मद्रास द्वारा भारतीय शास्त्रीय संगीत विषय में स्नातक स्तर का मुक्त एवं दूरस्थ प्रणाली आधारित पाठ्यक्रम प्रारम्भ किया गया। इसी क्रम में वर्तमान में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय–दिल्ली; उत्तराखण्ड़ मुक्त विश्वविद्यालय–हल्द्वानी, उत्तराखण्ड; मध्य प्रदेश भोज मुक्त विश्वविद्यालय–भोपाल, म0प्र0; सस्त्र विश्वविद्यालय, तिरूमलाईसमुद्रम, तंजावुर, तमिलनाडु; अन्नामलाई विश्वविद्यालय, अन्नामलाईनगर, तमिलनाडु; दूरवर्ती शिक्षा निदेशालय, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र; तमिल विश्वविद्यालय, थंजावुर, तमिलनाडू आदि संस्थान भी संगीत के पाठ्यक्रम संचालित कर रहे हैं।

उत्तराखण्ड़ मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के माध्यम से भारतीय शास्त्रीय संगीत के पाठ्यक्रम संचालित करता है। विश्वविद्यालय के मानविकी विद्याशाखा के अन्तर्गत संगीत, नृत्य एवं कला प्रदर्शन विभाग स्थापित है जो वर्ष 2011 से भारतीय शास्त्रीय संगीत के पाठ्यक्रम संचालित करता आ रहा है। संगीत, नृत्य एवं प्रदर्शन कला विभाग द्वारा भारतीय शास्त्रीय संगीत के अन्तर्गत गायन, स्वरवाद्य एवं तबला विधा में स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर के पाठ्क्रम संचालित करता है। इन पाठ्यक्रमों में शिक्षार्थियों को स्व–निर्देशात्मक अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराई जाती है। शिक्षार्थियों के लिए परामर्श सत्रों के साथ–साथ अनिवार्य कार्यशाला का आयोजन ऑफलाईन/ऑनलाईन माध्यम से किया जाता है। कार्यशाला के व्याख्यान के विड़ियो वेबसाईट पर भी उपलब्ध होते हैं। मूल्यांकन हेतु सैद्धान्तिक तथा प्रायोगिक दोनों प्रकार की परीक्षाएं आयेजित की जाती हैं।

उत्तराखण्ड़ मुक्त विश्वविद्यालय के स्नातक (बी0ए0–संगीत) तथा स्नातकोत्तर(एम0ए0 संगीत) पाठ्यक्रम का विश्लेषण तालिका के माध्यम से प्रस्तुत है।

तालिका 2 : उत्तराखण्ड़ मुक्त विश्वविद्यालय में संगीत के पाठ्यक्रमों में पंजीकृत शिक्षार्थियों के आंकड़े (लिंग सम्बन्धी)				
वर्ष	उत्तराखण्ड़ मुक्त विश्वविद्यालय में स्नातक(बी0ए0–संगीत विषय के साथ) पाठ्यक्रम में पंजीकृत कुल शिक्षार्थियों की संख्या		उत्तराखण्ड़ मुक्त विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर(एम0ए0 संगीत) पाठ्यक्रम में पंजीकृत कुल शिक्षार्थियों की संख्या	
2011–12	20	महिला – 08	93	महिला – 60
		पुरूष – 12		पुरूष – 33
2012–13	40	महिला – 16	156	महिला – 104
		पुरूष – 24		पुरूष – 52
2013–14	52	महिला – 24	115	महिला – 72
		पुरूष – 28		पुरूष – 43
2014–15	49	महिला – 15	38*	महिला – 22
		पुरूष – 34		पुरूष – 16
2015–16	53	महिला – 21	–*	महिला – 00
		पुरूष – 32		पुरूष – 00
2016–17	79	महिला – 28	–*	महिला – 00
		पुरूष – 51		पुरूष – 00
2017–18	67	महिला – 27	02*	महिला – 02
		पुरूष – 40		पुरूष – 00
2018–19	87	महिला – 28	–*	महिला – 00
		पुरूष – 59		पुरूष – 00
2019–20	99	महिला – 37	20	महिला – 10
		पुरूष – 62		पुरूष – 10
2020–21	125	महिला – 50	62	महिला – 29
		पुरूष – 75		पुरूष – 33

स्रोत : उत्तराखण्ड़ मुक्त विश्वविद्यालय(ICT विभाग) से प्राप्त आंकड़े

(* सत्र 2014–15 से 2018–19 तक यू.जी.सी. द्वारा एम.ए. संगीत पाठ्यक्रम के संचालन की अनुमति प्राप्त नहीं थी)

तालिका 2 के आधार पर यह कहा जा सकता है कि स्नातक(बी0ए0–संगीत) पाठ्यक्रम में पंजीकृत पुरूष शिक्षार्थियों की संख्या, महिला शिक्षार्थियों की तुलना में अधिक है, जो यह दर्शाता है कि संगीत के स्नातक स्तर के पाठ्यक्रम पुरूष शिक्षार्थियों में, महिला शिक्षार्थियों की तुलना में अधिक लोकप्रिय हैं। वहीं स्नातकोत्तर(एम0ए0–संगीत) पाठ्यक्रम के प्रति पुरूषों की अपेक्षा महिला शिक्षार्थियों का अधिक रूझान है। जिससे मुक्त एवं दूरस्थ प्रणाली के उद्देश्य की सार्थकता को बल मिलता है।

तालिका 3 : उत्तराखण्ड़ मुक्त विश्वविद्यालय में संगीत के पाठ्यक्रमों में पंजीकृत शिक्षार्थियों के आंकड़े (राज्य सम्बन्धी)				
वर्ष	उत्तराखण्ड़ मुक्त विश्वविद्यालय में स्नातक(बी0ए0–संगीत विषय के साथ) पाठ्यक्रम में पंजीकृत कुल शिक्षार्थियों की संख्या		उत्तराखण्ड़ मुक्त विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर(एम0ए0 संगीत) पाठ्यक्रम में पंजीकृत कुल शिक्षार्थियों की संख्या	
2011–12	20	उत्तराखण्ड़ राज्य – 19	93	उत्तराखण्ड़ राज्य – 81
		अन्य राज्य – 01		अन्य राज्य – 12
2012–13	40	उत्तराखण्ड़ राज्य – 39	156	उत्तराखण्ड़ राज्य – 140
		अन्य राज्य – 01		अन्य राज्य – 16
2013–14	52	उत्तराखण्ड़ राज्य – 52	115	उत्तराखण्ड़ राज्य – 103

		अन्य राज्य – 00		अन्य राज्य – 12
2014–15	49	उत्तराखण्ड़ राज्य – 45	38*	उत्तराखण्ड़ राज्य – 33
		अन्य राज्य – 04		अन्य राज्य – 05
2015–16	53	उत्तराखण्ड़ राज्य – 48	–*	उत्तराखण्ड़ राज्य – 00
		अन्य राज्य – 05		अन्य राज्य – 00
2016–17	79	उत्तराखण्ड़ राज्य – 70	–*	उत्तराखण्ड़ राज्य – 00
		अन्य राज्य – 09		अन्य राज्य – 00
2017–18	67	उत्तराखण्ड़ राज्य – 63	02*	उत्तराखण्ड़ राज्य – 02
		अन्य राज्य – 04		अन्य राज्य – 00
2018–19	87	उत्तराखण्ड़ राज्य – 79	–*	उत्तराखण्ड़ राज्य – 00
		अन्य राज्य – 08		अन्य राज्य – 00
2019–20	99	उत्तराखण्ड़ राज्य – 94	20	उत्तराखण्ड़ राज्य – 18
		अन्य राज्य – 05		अन्य राज्य – 02
2020–21	125	उत्तराखण्ड़ राज्य – 114	62	उत्तराखण्ड़ राज्य – 48
		अन्य राज्य – 11		अन्य राज्य – 14

स्रोत : उत्तराखण्ड़ मुक्त विश्वविद्यालय(ICT विभाग) से प्राप्त आंकड़े

(* सत्र 2014–15 से 2018–19 तक यू.जी.सी. द्वारा एम.ए. संगीत पाठ्यक्रम के संचालन की अनुमति प्राप्त नहीं थी)

तालिका 3 के आधार पर यह कहा जा सकता है कि स्नातक(बी0ए0–संगीत) पाठ्यक्रम तथा स्नातकोत्तर(एम0ए0–संगीत) पाठ्यक्रम दोनों में पंजीकृत उत्तराखण्ड़ राज्य के शिक्षार्थियों की संख्या, अन्य राज्य के शिक्षार्थियों की तुलना में अधिक है। उक्त रूझान के आधार पर यह कहा जा सकता है कि जिस प्रकार उत्तराखण्ड़ राज्य, साक्षरता प्रतिशत के मामले में भारत के अधिक साक्षरता वाले राज्यों में सम्मिलित है, उसी प्रकार उत्तराखण्ड़ राज्य के संगीत शिक्षार्थी मुक्त एवं दूरस्थ प्रणाली से शिक्षा प्राप्त करने में भी अन्य राज्यों की अपेक्षा आगे हैं।

तालिका 4 : उत्तराखण्ड़ मुक्त विश्वविद्यालय में संगीत के पाठ्यकमों में पंजीकृत शिक्षार्थियों के आंकड़े (क्षेत्र सम्बन्धी)

वर्ष	उत्तराखण्ड़ मुक्त विश्वविद्यालय में स्नातक(बी0ए0–संगीत विषय के साथ) पाठ्यक्रम में पंजीकृत कुल शिक्षार्थियों की संख्या		उत्तराखण्ड़ मुक्त विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर(एम0ए0 संगीत) पाठ्यक्रम में पंजीकृत कुल शिक्षार्थियों की संख्या	
2011–12	20	ग्रामीण – 11	93	ग्रामीण – 42
		शहरी – 08		शहरी – 42
2012–13	40	ग्रामीण – 11	156	ग्रामीण – 30
		शहरी – 20		शहरी – 53
2013–14	52	ग्रामीण – 15	115	ग्रामीण – 26
		शहरी – 15		शहरी – 28
2014–15	49	ग्रामीण – 16	38*	ग्रामीण – 03
		शहरी – 07		शहरी – 00
2015–16	53	ग्रामीण – 29	–*	ग्रामीण – 00
		शहरी – 19		शहरी – 00
2016–17	79	ग्रामीण – 48	–*	ग्रामीण – 00
		शहरी – 26		शहरी – 00

2017–18	67	ग्रामीण – 39	02*	ग्रामीण – 00
		शहरी – 18		शहरी – 02
2018–19	87	ग्रामीण – 56	–*	ग्रामीण – 00
		शहरी – 28		शहरी – 00
2019–20	99	ग्रामीण – 58	20	ग्रामीण – 10
		शहरी – 36		शहरी – 10
2020–21	125	ग्रामीण – 52	62	ग्रामीण – 16
		शहरी – 73		शहरी – 46

स्रोत : उत्तराखण्ड़ मुक्त विश्वविद्यालय(ICT विभाग) से प्राप्त आंकड़े

(* सत्र 2014–15 से 2018–19 तक यू.जी.सी. द्वारा एम.ए. संगीत पाठ्यक्रम के संचालन की अनुमति प्राप्त नहीं थी)

उक्त तालिका 4 में वर्णित आंकड़ों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि स्नातक(बी0ए0–संगीत) पाठ्यक्रम के प्रति शहरी क्षेत्र के शिक्षार्थियों की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षार्थियों का अधिक रूझान है। जबकि स्नातकोत्तर(एम0ए0–संगीत) पाठ्यक्रम के प्रति, अधिकतर सत्रों में ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षाथियों की अपेक्षा शहरी क्षेत्र के शिक्षार्थियों का अधिक रूझान है।

तालिका 5 : उत्तराखण्ड़ मुक्त विश्वविद्यालय में संगीत के पाठ्यकमों में पंजीकृत शिक्षार्थियों के आंकड़े (आजीविका सम्बन्धी)

वर्ष	उत्तराखण्ड़ मुक्त विश्वविद्यालय में स्नातक(बी0ए0–संगीत विषय के साथ) पाठ्यकम में पंजीकृत कुल शिक्षार्थियों की संख्या		उत्तराखण्ड़ मुक्त विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर(एम0ए0 संगीत) पाठ्यकम में पंजीकृत कुल शिक्षार्थियों की संख्या	
2011–12	20	आजीविकाप्राप्त – 05	93	आजीविकाप्राप्त – 15
		आजीविकाविहीन – 14		आजीविकाविहीन – 66
2012–13	40	आजीविकाप्राप्त – 05	156	आजीविकाप्राप्त – 24
		आजीविकाविहीन – 33		आजीविकाविहीन – 105
2013–14	52	आजीविकाप्राप्त – 05	115	आजीविकाप्राप्त – 22
		आजीविकाविहीन – 39		आजीविकाविहीन – 70
2014–15	49	आजीविकाप्राप्त – 05	38*	आजीविकाप्राप्त – 10
		आजीविकाविहीन – 35		आजीविकाविहीन – 23
2015–16	53	आजीविकाप्राप्त – 05	–*	आजीविकाप्राप्त – 00
		आजीविकाविहीन – 40		आजीविकाविहीन – 00
2016–17	79	आजीविकाप्राप्त – 05	–*	आजीविकाप्राप्त – 00
		आजीविकाविहीन – 63		आजीविकाविहीन – 00
2017–18	67	आजीविकाप्राप्त – 06	02*	आजीविकाप्राप्त – 00
		आजीविकाविहीन – 48		आजीविकाविहीन – 02
2018–19	87	आजीविकाप्राप्त – 04	–*	आजीविकाप्राप्त – 00
		आजीविकाविहीन – 63		आजीविकाविहीन – 00
2019–20	99	आजीविकाप्राप्त – 02	20	आजीविकाप्राप्त – 03
		आजीविकाविहीन – 85		आजीविकाविहीन – 14
2020–21	125	आजीविकाप्राप्त – 07	62	आजीविकाप्राप्त – 28
		आजीविकाविहीन – 118		आजीविकाविहीन – 34

स्रोत : उत्तराखण्ड़ मुक्त विश्वविद्यालय(ICT विभाग) से प्राप्त आंकड़े

(* सत्र 2014–15 से 2018–19 तक यू.जी.सी. द्वारा एम.ए. संगीत पाठ्यक्रम के संचालन की अनुमति प्राप्त नहीं थी)

उक्त तालिका 5 में वर्णित आंकड़ों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि स्नातक(बी0ए0–संगीत) तथा स्नातकोत्तर(एम0ए0–संगीत), दोनों पाठ्यक्रम के प्रति आजीविकाप्राप्त शिक्षार्थियों की अपेक्षा आजीविकाविहीन शिक्षार्थियों का अधिक रूझान है। मुक्त एवं दूरस्थ प्रणाली के उद्देश्यों में से एक है आजीविकाप्राप्त व्यक्तियों को अपनी ज्ञान को बढ़ाने व अद्यतन रखने के अवसर प्रदान करना। ऐसे में उक्त पाठ्यक्रम का आजीविकाप्राप्त लोगों में प्रचार–प्रसार किया जाना आवश्यक है जिससे आजीविकाप्राप्त लोग भी लाभान्वित हो सकें।

तालिका 6 : उत्तराखण्ड़ मुक्त विश्वविद्यालय में संगीत के पाठ्यक्रमों में पंजीकृत शिक्षार्थियों के आंकड़े (आयु सम्बन्धी)

वर्ष	उत्तराखण्ड़ मुक्त विश्वविद्यालय में स्नातक(बी0ए0–संगीत विषय के साथ) पाठ्यक्रम में पंजीकृत कुल शिक्षार्थियों की संख्या		उत्तराखण्ड़ मुक्त विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर(एम0ए0 संगीत) पाठ्यक्रम में पंजीकृत कुल शिक्षार्थियों की संख्या	
2011–12	20	≤ 30 वर्ष – 04	93	≤ 30 वर्ष – 00
		> 30 वर्ष – 16		> 30 वर्ष – 93
2012–13	40	≤ 30 वर्ष – 11	156	≤ 30 वर्ष – 00
		> 30 वर्ष – 29		> 30 वर्ष – 156
2013–14	52	≤ 30 वर्ष – 16	115	≤ 30 वर्ष – 13
		> 30 वर्ष – 36		> 30 वर्ष – 102
2014–15	49	≤ 30 वर्ष – 23	38*	≤ 30 वर्ष – 07
		> 30 वर्ष – 26		> 30 वर्ष – 31
2015–16	53	≤ 30 वर्ष – 29	–*	≤ 30 वर्ष – 00
		> 30 वर्ष – 24		> 30 वर्ष – 00
2016–17	79	≤ 30 वर्ष – 47	–*	≤ 30 वर्ष – 00
		> 30 वर्ष – 32		> 30 वर्ष – 00
2017–18	67	≤ 30 वर्ष – 39	02*	≤ 30 वर्ष – 00
		> 30 वर्ष – 28		> 30 वर्ष – 02
2018–19	87	≤ 30 वर्ष – 67	–*	≤ 30 वर्ष – 00
		> 30 वर्ष – 20		> 30 वर्ष – 00
2019–20	99	≤ 30 वर्ष – 82	20	≤ 30 वर्ष – 10
		> 30 वर्ष – 17		> 30 वर्ष – 10
2020–21	125	≤ 30 वर्ष – 113	62	≤ 30 वर्ष – 34
		> 30 वर्ष – 12		> 30 वर्ष – 28

स्रोत : उत्तराखण्ड़ मुक्त विश्वविद्यालय (ICT विभाग) से प्राप्त आंकड़े

(* सत्र 2014–15 से 2018–19 तक यू.जी.सी. द्वारा एम.ए. संगीत पाठ्यक्रम के संचालन की अनुमति प्राप्त नहीं थी)

उक्त तालिका 6 में वर्णित आंकड़ों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि स्नातक(बी0ए0–संगीत) पाठ्यक्रम में शुरूआती वर्षों में 30 वर्ष या 30 वर्ष से कम आयु के शिक्षार्थी, 30 वर्ष से अधिक आयु के शिक्षार्थियों की अपेक्षा कम थे, जिनकी संख्या में बाद में लगातार वृद्धि होते गई। वही अधिकतर सत्रों में स्नातकोत्तर(एम0ए0–संगीत) पाठ्यक्रम के प्रति 30 वर्ष या 30 वर्ष से कम आयु के शिक्षाथियों की अपेक्षा 30 वर्ष से अधिक आयु के शिक्षार्थियों

का अधिक रूझान है, जिससे मुक्त एवं दूरस्थ प्रणाली की सार्थकता को बल मिलता है कि इस प्रणाली के माध्यम से अधिक आयु के व्यक्ति भी शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

निष्कर्ष एवं सुझाव—भारत में उच्च शिक्षा के अन्तर्गत भारतीय शास्त्रीय संगीत जैसे प्रयोगात्मक एवं कलात्मक विषयों में भी मुक्त एवं दूरस्थ प्रणाली बहुत प्रभावी एवं लोकप्रिय हो रही है। प्रस्तुत शोध पत्र में भी यह पाया गया है कि भारतीय शास्त्रीय संगीत के पाठ्यक्रमों में पंजीकृत होने वाले शिक्षार्थियों की संख्या में प्रतिवर्ष वृद्धि हो रही है और इसके मुख्य कारण हैं इस प्रणाली का विद्यार्थी केन्द्रित होना, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (ICT) आधारित होना, शिक्षार्थियों में मुक्त एवं दूरस्थ प्रणाली के प्रति जागरूकता आदि। इस दिशा में मुक्त एवं दूरस्थ विश्वविद्यालयों के साथ—साथ केन्द्र सरकार व राज्य सरकारों द्वारा महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं।

उत्तराखण्ड़ मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा संचालित स्नातक व स्नातकोत्तर, दोनों स्तर के पाठ्यक्रमों में पंजीकृत शिक्षार्थियों से सम्बन्धित विभिन्न पहलुओं के विश्लेषण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि शिक्षार्थियों में मुक्त एवं दूरस्थ प्रणाली के प्रति जागरूकता बढ़ी है। शिक्षार्थियों के नामांकन में, पंजीकृत शिक्षार्थियों के महिला—पुरूष अनुपात में, ग्रामीण—शहरी क्षेत्र के शिक्षार्थियों के अनुपात में, आजीविकाप्राप्त— आजीविकाविहीन शिक्षार्थियों के अनुपात तथा विभिन्न आयु के शिक्षार्थियों के अनुपात में उतार—चढाव देखने को अवश्य मिले लेकिन यह पाठ्यक्रम भारतीय शास्त्रीय संगीत की शिक्षा प्राप्त करने के इच्छुक उन सभी शिक्षार्थियों के लिए एक वरदान के रूप में प्रतीत होते हैं, जो उपलब्ध अन्य किसी भी प्रणाली से शिक्षा प्राप्त करने में अक्षम थे। साथ ही यह पाठ्यक्रम मुक्त एवं दूरस्थ प्रणाली के उद्देश्य की पूर्ति करते भी दिखते हैं।

प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से कुछ सुझाव प्रस्तावित हैं जिनपर क्रियान्वयन कर मुक्त एवं दूरस्थ प्रणाली को अधिक प्रभावी एवं लोकप्रिय बनाया जा सके।

1. महिला व पुरूष के नामांकन बढ़ाने के लिए राज्य, जिला, ब्लाक, गांव स्तर पर इस प्रणाली के प्रचार—प्रसार तथा जागरूकता हेतु अभियान चलाए जाने चाहिए।

2. ग्रामीण व शहरी दोनों क्षेत्रों में मुक्त एवं दूरस्थ प्रणाली के प्रचार—प्रसार करने से, सम्बन्धित क्षेत्र में तकनीक के प्रयोग को बढ़ाने के लिए तकनीक सम्बन्धी मूलभूत एवं आवश्यक ढ़ांचा स्थापित करने से, सम्बन्धित क्षेत्र के शिक्षार्थियों को तकनीक सीखाने एवं इसके प्रयोग में दक्ष बनाने के लिए कार्यशाला का आयोजन करने से, इन पाठ्यक्रमों के नामांकन में वृद्धि लाई जा सकती है।

3. आजीविकाप्राप्त व आजीविकाविहीन दोनों ही प्रकार के शिक्षार्थियों में तथा अधिक आयु के शिक्षार्थियों में इस प्रणाली के प्रति रूचि बढ़ाने के लिए प्रचार—प्रसार तथा जागरूकता अभियान चलाया जाना चाहिए।

उक्त सुझावों पर क्रियान्वयन हेतु यदि विश्वविद्यालय, सरकार, अन्य सम्बन्धित संस्थाओं आदि द्वारा सम्मिलित रूप में प्रयास किए जाएं तो बेहतर परिणाम अवश्य प्राप्त होंगे।

सन्दर्भ सूची

1. चौरसिया, ओम प्रकाश, संपा0, 2013, दूरस्थ संगीत शिक्षा, कनिष्का पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
2. शर्मा, स्वतन्त्र, 2010, सौन्दर्य रस और संगीत, अनुभव पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद।
3. रामनाथन, एन0, 2012, चौरसिया, ओम प्रकाश, संपा0, 2013, दूरस्थ संगीत शिक्षा, कनिष्का पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
4. Srivastav, Majulika(2012),Open Universities:India's answer to challenges in higher education.
5. Banisudha, Bilambita, 2022, Journey Of Indian Music Education From Gurukul To Modern Era, International Journal of Multidisciplinary Educational Research, Volume 11, Issue 2(6), February 2022, pp. 52-58.
6. Clayton, Martin (2002) 'Teaching Indian music at a distance : a perspective from the UK.', Journal of the Indian Musicological Society., 33 . pp. 36-41.
7. https://www.academia.edu/638528/Distance_Education_in_Indian_Music_Feasibility_and_Prospects

8. Sharma, Madhulika, 2009, Distance Education: Concepts and Principles, Kanishka Publishers, Distributors, New Delhi.
9. Sharma, B.M., ed., 2009, Distance Education, Commonwealth Publishers, New Delhi.
10. Harichandan, Dhaneshwar, ed., 2009, Open And Distance Learning: Exploring New Frontiers & Developments, Himalaya Publishing House Pvt. Ltd., Mumbai.
11. Goel, Aruna and Goel, S.L., 2009, Distance Education: Principles, Potentialities and Perspective, Deep & Deep Publications Pvt. Ltd., New Delhi.
12. Upadhyay, D., & Joshi, N. (2017). उच्च शिक्षा में दूरस्थ शिक्षण प्रणाली के माध्यम से भारतीय शास्त्रीय संगीत का शिक्षणः एक समीक्षात्मक विश्लेषण. *International Journal of Research - GRANTHAALAYAH*, *5*(2), 225–232.P 225-232
13. IGNOU(1985), IGNOU Act, Government of India, (No.5 of 1985).
14. www.mhrd.gov.in
15. www.ugc.ac.in
16. www.ignou.ac.in
17. www.uou.ac.in
18. www.col.org
19. https://aishe.gov.in/aishe/home